Name of the college – APSM College Barauni
Name → Dr. Rajesh Kumar Suman
Deptt → Economics
Date → 24-8-2021
Designation → [G.T]
Class → B.A Part-I
Paper → II

Name of the topic → [Importance of Agriculture Indian Economy]
Unit-01
⇒ Green Revolution

⇒ फसल पद्धति [Cropping pattern] → किसी क्षेत्र में वहाँ की स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप जैसे → मिट्टी का प्रकार एवं मिट्टी की उर्वरता, जल की उपलब्धता, जलवायु इत्यादि के आधार पर किसान खेती के लिये जिन फसलों के मिश्रण को चुनते हैं वह उस क्षेत्र का शस्य प्रतिरूप (फसल पद्धति) होता है। कृषि प्रणाली की बहुतायत भारतीय कृषि की मुख्य विशेषता रही है और इसकी वजह बारिश पर निर्भर कृषि और कृषक समाज की सामाजिक - आर्थिक परिस्थितियाँ हैं। किसी क्षेत्र फसल पद्धति सामान्यतया कई मृदा और जलवायविक परिस्थितियों पर निर्भर करती है और पूरे कृषि पर्यावरण में किसी फसल या फसलों के समूह के योजना और उपयुक्तता को तय करती है। क्योंकि किसानों के द्वारा पर किसी फसल या खेती के तरीके को चुनते समय संभावित उत्पादकता और मौद्रिक लाभ दिशा - निर्देशक के रूप में काम करते हैं। प्रारंभ में किसानों द्वारा कृषि कार्यों का मुख्य उद्देश्य अपनी खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति करना था लेकिन हरित क्रांति के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में वृद्धि होने के पश्चात किसान वाणिज्यिक लाभ के उद्देश्य से वाणिज्यिक फसलों का उत्पादन करने लगे। फसल एवं फसल पद्धति का चयन निम्नलिखित कारकों के आधार पर किया जाता है।

⇒ भौगोलिक कारण → मृदा का प्रकार एवं उर्वरता, नमी की मात्रा, खेत का आकार, जलवायु, जल की उपलब्धता आदि।

⇒ आधारभूत कारण → सिंचाई प्रणाली, यातायात, भंडारण, विपणन, प्रसंस्करण आदि।

Scanned with CamScanner

~~=> आर्थिक कारण ->~~

=> आर्थिक कारण -> भू-स्वामित्व, कृषि भूमि का आकार एवं प्रकार वित्तीय एवं अन्य संसाधनों की स्थिति, स्वयं की खाद्य आवश्यकताएँ, कृषि उत्पाद का न्यूनतम बाजार मूल्य, श्रम की उपलब्धता आदि।

=> कृषि आदान की उपलब्धता के उन्नत किस्म के बीजों, उर्वरकों एवं कीटनाशकों की उपलब्धता, मशीनीकरण का स्तर, प्रौद्योगिकी का उपयोग आदि।

'कृषि लागत एवं मूल्य आयोग' द्वारा कृषि फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य जारी किये जाने के पश्चात से फसल पद्धति में काफी बदलाव आया है। जिस फसल का न्यूनतम समर्थन मूल्य अधिक होता है किसान उसी फसल के उत्पादन को प्राथमिकता देते है।

उदाहरणस्वरूप - गेहूँ और चावल के न्यूनतम समर्थन मूल्य में निरंतर वृद्धि के परिणामस्वरूप किसान इन फसलों के उत्पादन को प्राथमिकता देते हैं जिस के मोटे अनाज और दालों के अन्तर्गत बोए जाने वाले क्षेत्र में कमी हो रही है।

Scanned with CamScanner